प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

ग्रामीण विकास हेतु रणनीतिक सुझावों के साथ समाप्त हुयी राष्ट्रीय संगोष्ठी

पंतनगर। 22 अगस्त 2019। पंतनगर विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान महाविद्यालय के वस्त्र एवं परिधान विभाग द्वारा आयोजित की जा रही 'ग्रामीण विकास में सामुदायिक विज्ञान शिक्षा की भूमिका' विषय पर दो-दिवसीय संगोष्ठी का आज समापन गृह विज्ञान महाविद्यालय के सभागार में हुआ। समापन सत्र में मुख्य अतिथि, उत्तराखण्ड की नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण की अतिरिक्त आयुक्त, डा. सुचिस्मिता सेनगुप्ता पाण्डे, के साथ जनरल सेक्रेटरी, अखिल भारतीय महिला रोजगार संगठन, गुड़गांव, डा ज्योत्सना कपूर, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अटारी, लुधियाना, पंजाब, डा. राजवीर सिंह, तथा अधिष्ठात्री, गृह विज्ञान महाविद्यालय, डा. रीता सिंह रघुवंशी, उपस्थित थे। कार्यक्रम भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित किया गया। इस संगोष्ठी की समन्वयक, वस्त्र एवं परिधान की विभागाध्यक्ष, डा. अल्का गोयल हैं।

डा. सुचिस्मिता सेनगुप्ता ने संगोष्ठी में प्रस्तुत हुए विभिन्न विषयों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए युवाओं एवं विद्यार्थियों का आह्वान किया कि वे ग्रामीण विकास में आ रही रूकावटों को चुनौती के रूप में लेकर इस तरह के शोधकार्य करें जिससे ग्रामीण जनता विकास की मुख्यधारा से जुड़ सके व देश का सतत एवं समग्र विकास हो सके। डा. राजवीर सिंह ने बताया कि इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में ग्रामीण विकास के विभिन्न पहलुओं पर हुई महत्वपूर्ण चर्चा ग्रामीण विकास को मजबूती प्रदान करने में सहायक रहेगी। उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि कृषि विज्ञान केन्द्र ग्रामीण परिवारों एवं वैज्ञानिकों के बीच महत्वपूर्ण कड़ी साबित हो सकते हैं एवं आशा व्यक्त की कि इस संगोष्ठी के सुझाव व रणनीतियों का व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार किया जायेगा, जिससे शोधकर्ता, प्रसार कार्यकर्ता एवं नीति निर्माता इस दिशा में मिलकर कार्य कर सकेंगे। डा. रीता सिंह रघुवंशी, अधिष्ठात्री, गृह विज्ञान महाविद्यालय, ने संगोष्ठी के बारे में बताते हुए कहा कि इस संगोष्ठी में वैज्ञानिक, उद्यमी, प्रसार कार्यकर्ता एवं शोधकर्ताओं के बीच हुए महत्वपूर्ण संवाद एवं चर्चा ग्रामीण विकास की योजना बनाने व उसे लागू करने में सहायक सिद्ध होगी। डा. साक्षी, संयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी, ने विभिन्न तकनीकी सत्रों में हुए प्रस्तुतीकरण की संक्षिप्त व्याख्या प्रस्तुत की।

दो-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में विभिन्न तकनीकी विषयों यथा सामुदायिक विज्ञान शिक्षा : आयाम एवं दिशायें, परंपरागत हस्तकला एवं रोजगार के अवसर, स्थानीय कला का मूल्यवर्धन एवं विविधीकरण, परंपरागत खाद्य - रोजगार का एक जरिया, कृषि तकनीकी एवं ग्रामीण परिवर्तन/रूपान्तरण, कृषि विज्ञान केन्द्र : कृषि संस्थाओं एवं ग्रामीण परिवारों के बीच की कड़ी, एवं उद्यमिता विकास, पर मौखिक एवं पोस्टर प्रदर्शन द्वारा शोध एवं प्रसार कार्यों की प्रस्तुति की गई एवं ग्रामीण क्षेत्रों की पारम्परिक कला, पारम्परिक खाद्यान्न, पारम्परिक तकनीकियों का मूल्यवर्धन कर उन्हें व्यवसायिक स्तर पर कौशलता विकसित कर उद्यमिता विकसित करने एवं उनके विपणन में आ रही समस्याओं को दूर कर उन्हें बाजार से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया गया। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोधकर्ता, विद्यार्थी, कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक, कृषि वैज्ञानिक, प्रसार कार्यकर्ता, उद्यमी एवं एन.जी.ओ. कार्यकर्ताओं के द्वारा शोध कार्यों का प्रदर्शन एवं व्यापक विचार विमर्श कर भविष्य के लिए ग्रामीण विकास में सामुदायिक विज्ञान शिक्षा द्वारा किय जाने वाले कार्य की रूपरेखा एवं रणनीति बनाई गई।

कार्यक्रम के अन्त में अतिथियों द्वारा पोस्टर प्रदर्शन के लिए डा. मीनाक्षी, डा. पूजा भटट, आदिता सिंह, श्वेता सूरी, श्वेता जोशी एवं डा. सुधा जुकारिया तथा मौखिक प्रदर्शन के लिए डा. उपासना, कुमारी एन. पल्लवी, डा. शशि तिवारी, अंकिता डोभाल एवं राधिका जैन को प्रथम पुरस्कार दिया गया। कार्यक्रम का संचालन डा. अनीता रानी, सह प्राध्यापक एवं सह संयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी, द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में विभिन्न सत्रों के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते अतिथि एवं वैज्ञानिक।